











# संपादकीय

## तकनीकी जासूसी

अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में इन दिनों एक खबर प्रमुखता बनाये हुए है, जिसका सार यह है कि अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया समेत पर्याप्त के देशों की इन दिनों एक नवी चुनौती समान आने के बाद नई उड़ी हुई है। यह चुनौती पैदा हुई है जीन द्वारा कथित तौर पर को जा रही नये तरीके से जीन से। विश्व में बड़े ऐलेवर को भूमिका निभाने वाले इन देशों को खुफिया एजेंसियां आगे लगा रही हैं कि जीन तकनीकी और औद्योगिक जासूसी के काम में वर्सों से लिप्त है, लेकिन इस तरफ किसी का सहजता से ध्यान नहीं गया। यह मामला खुफिया एजेंसियों द्वारा जिस तरह के मामलों की जासूसी की जाती है, उससे बिल्कुल ही अलग है। जीन से दुनिया की चोरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में अग्रसर है, लेकिन अभी तक भारत में युगतायुक्त उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पर्याप्त विकल्प एवं अवसर उपलब्ध नहीं हैं। यही वजह है कि यहां के छात्र विदेश पढ़ने जाते हैं। हालांकि ये छात्र वहां पढ़ाई के क्षेत्र में दुश्वारियों से ज्यादा अपनी जान को लेकर ज्यादा चिंतित हैं। दरअसल, कई मुल्कों में भारतीय छात्रों पर जानलेवा हमले की संख्या बढ़ी है।

चीन एसडिजेड के माध्यम से न केवल विश्व में बड़ा निर्माता बन कर उभरा है, बल्कि विश्व की कई बड़ी कंपनियों को अपने उद्योग चीन में स्थापित करने के लिए प्रेरित करने ने कामयाब रहा।

बात है इन सूचनाओं का उपयोग चीनी कंपनियां अपने प्रोडक्ट के निर्माण और युग्मता और नये अधिकारों के लिए हमें 80 के दशक में जाना होगा। वर्ष 1980 में चीन ने पहली बार 4 सेस्टेम इकोनॉमिक जॉन बनाये थे। जिन्हें एसडिजेड कहा जाता है। यानी आज से तकरीबन 43 वर्ष पहले चीन ने बड़ी औद्योगिक स्तर पर बस्तुओं के निर्माण की दिशा में बड़ा और ठोस कदम बढ़ा लिया था। इससे पहले आमरलैट में 1950 में एसडिजेड स्थापित किया गया था। उसके बाद कुछ अन्य देशों में भी ऐसे प्रयोग हुए, लेकिन वहां ये सफलता शायद नहीं पिल पायी, जो चीन ने हासिल कर ली। चीन एसडिजेड के माध्यम से न केवल विश्व में बड़ा निर्माता बन कर उभरा है, बल्कि विश्व की कई बड़ी कंपनियों को अपने उद्योग चीन में स्थापित करने के लिए प्रेरित करने में कामयाब रहा। आज जब पर्याप्त के देश चीन द्वारा कथित तौर पर को जा रही कमर्शियल एवं औद्योगिक जासूसी को लेकर चिंतित हैं और इस पर न केवल अब खुल कर बोल रहे हैं, बल्कि चर्चा कर रहे हैं। ऐसे में भारत को निर्माण और निवेश के विषय को और ज्यादा गंभीरता से लेते हुए अपनी उत्पादन क्षमता को बढ़ाने पर जो देना होगा।

### अभिमत आजाद सिपाही

बहरहाल, आज देशभर में 1000 से अधिक विश्वविद्यालय और 42,000 से अधिक कॉलेज उच्च शिक्षा प्रदान करने का काम कर रहे हैं, लेकिन इनके पास अभी भी पर्याप्त पूँजी, कुशल शिक्षक और आधारित संरचना की कठीनी है। भारत का कोई कॉलेज या विश्वविद्यालय आज भी दुनिया में शीर्ष 10 स्थानों पर काबिज नहीं है। भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर योग्य अधिकारी नहीं हैं। छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना, जिसे बुनियादी सुविधाओं, कुशल शिक्षक और पूँजी उपलब्ध कराकर प्रदान किया जाना चाहिए।

## विदेशों में शिक्षा ग्रहण करनेवाले छात्रों की संख्या में वृद्धि

### सतीश सिंह

भले ही भारत दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और तेज़ी से दुनिया की चोरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में अग्रसर है, लेकिन अभी तक भारत में युगतायुक्त उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पर्याप्त विकल्प एवं अवसर उपलब्ध नहीं हैं। यही वजह है कि यहां के छात्र विदेश पढ़ने जाते हैं। हालांकि ये छात्र वहां पढ़ाई के क्षेत्र में दुश्वारियों से ज्यादा अपनी जान को लेकर ज्यादा चिंतित हैं। दरअसल, कई मुल्कों में भारतीय छात्रों पर जानलेवा हमले की संख्या बढ़ी है।

बहरहाल, आज देशभर में 1000 से अधिक विश्वविद्यालय और 42,000 से अधिक कॉलेज उच्च शिक्षा प्रदान करने का काम कर रहे हैं, लेकिन इनके पास अभी भी पर्याप्त पूँजी, कुशल शिक्षक और आधारभूत संरचना की कठीनी है। भारत का कोई कॉलेज या विश्वविद्यालय आज भी दुनिया में शीर्ष 10 स्थानों पर काबिज नहीं है। इसके बाद भी अधिकारी नहीं हैं। जिसमें कहा गया है कि चीन ये लंबे समय से करता आ रहा है। तो चीन ये लंबे समय से करता आ रहा है।

भारतीय छात्र विदेश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर सुधार के बावजूद सबसे बड़ी चुनौती है। छात्रों को

भारत में नेटिकल सीट कम होने की वजह से यहां निर्मान कर आ रहा है, वर्तमान अपरेटर लगाया है। इसका निर्मान कर आ रहा है, वर्तमान अपरेटर लगाया है।

बहरहाल, आज देशभर में 1000 से अधिक विश्वविद्यालय और 42,000 से अधिक कॉलेज उच्च शिक्षा प्रदान करने का काम कर रहे हैं, लेकिन इनके पास अभी भी पर्याप्त पूँजी, कुशल शिक्षक और आधारभूत संरचना की कठीनी है। भारत का कोई कॉलेज या विश्वविद्यालय आज भी दुनिया में शीर्ष 10 स्थानों पर काबिज नहीं है। इसके बाद भी अधिकारी नहीं हैं। जिसमें कहा गया है कि चीन ये लंबे समय से करता आ रहा है। तो चीन ये लंबे समय से करता आ रहा है।

भारतीय छात्र विदेश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर सुधार के बावजूद सबसे बड़ी चुनौती है। छात्रों को

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना, जिसे बुनियादी सुविधाओं, कुशल शिक्षक और पूँजी उपलब्ध कराकर जाने को लेकर ज्यादा चिंतित हैं। दरअसल, कई मुल्कों में भारतीय छात्रों पर जानलेवा हमले की संख्या बढ़ी है।

बहरहाल, आज देशभर में 1000 से अधिक विश्वविद्यालय और 42,000 से अधिक कॉलेज उच्च शिक्षा प्रदान करने का काम कर रहे हैं, लेकिन इनके पास अभी भी पर्याप्त पूँजी, कुशल शिक्षक और आधारभूत संरचना की कठीनी है। भारत का कोई कॉलेज या विश्वविद्यालय आज भी दुनिया में शीर्ष 10 स्थानों पर काबिज नहीं है। इसके बाद भी अधिकारी नहीं हैं। जिसमें कहा गया है कि चीन ये लंबे समय से करता आ रहा है। तो चीन ये लंबे समय से करता आ रहा है।

भारतीय छात्र विदेश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर सुधार के बावजूद सबसे बड़ी चुनौती है। छात्रों को

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना, जिसे बुनियादी सुविधाओं, कुशल शिक्षक और पूँजी उपलब्ध कराकर जाने को लेकर ज्यादा चिंतित हैं। दरअसल, कई मुल्कों में भारतीय छात्रों पर जानलेवा हमले की संख्या बढ़ी है।

बहरहाल, आज देशभर में 1000 से अधिक विश्वविद्यालय और 42,000 से अधिक कॉलेज उच्च शिक्षा प्रदान करने का काम कर रहे हैं, लेकिन इनके पास अभी भी पर्याप्त पूँजी, कुशल शिक्षक और आधारभूत संरचना की कठीनी है। भारत का कोई कॉलेज या विश्वविद्यालय आज भी दुनिया में शीर्ष 10 स्थानों पर काबिज नहीं है। इसके बाद भी अधिकारी नहीं हैं। जिसमें कहा गया है कि चीन ये लंबे समय से करता आ रहा है। तो चीन ये लंबे समय से करता आ रहा है।

भारतीय छात्र विदेश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर सुधार के बावजूद सबसे बड़ी चुनौती है। छात्रों को

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना, जिसे बुनियादी सुविधाओं, कुशल शिक्षक और पूँजी उपलब्ध कराकर जाने को लेकर ज्यादा चिंतित हैं। दरअसल, कई मुल्कों में भारतीय छात्रों पर जानलेवा हमले की संख्या बढ़ी है।

भारतीय छात्र विदेश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर सुधार के बावजूद सबसे बड़ी चुनौती है। छात्रों को

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना, जिसे बुनियादी सुविधाओं, कुशल शिक्षक और पूँजी उपलब्ध कराकर जाने को लेकर ज्यादा चिंतित हैं। दरअसल, कई मुल्कों में भारतीय छात्रों पर जानलेवा हमले की संख्या बढ़ी है।

भारतीय छात्र विदेश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर सुधार के बावजूद सबसे बड़ी चुनौती है। छात्रों को

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना, जिसे बुनियादी सुविधाओं, कुशल शिक्षक और पूँजी उपलब्ध कराकर जाने को लेकर ज्यादा चिंतित हैं। दरअसल, कई मुल्कों में भारतीय छात्रों पर जानलेवा हमले की संख्या बढ़ी है।

भारतीय छात्र विदेश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर सुधार के बावजूद सबसे बड़ी चुनौती है। छात्रों को

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना, जिसे बुनियादी सुविधाओं, कुशल शिक्षक और पूँजी उपलब्ध कराकर जाने को लेकर ज्यादा चिंतित हैं। दरअसल, कई मुल्कों में भारतीय छात्रों पर जानलेवा हमले की संख्या बढ़ी है।

भारतीय छात्र विदेश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर सुधार के बावजूद सबसे बड़ी चुनौती है। छात्रों को

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना, जिसे बुनियादी सुविधाओं, कुशल शिक्षक और पूँजी उपलब्ध कराकर जाने को लेकर ज्यादा चिंतित हैं। दरअसल, कई मुल्कों में भारतीय छात्रों पर जानलेवा हमले की संख्या











